International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(5): 158-161

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(5): 158-161
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 24-07-2023
Accepted: 29-08-2023

डॉ. सपना चन्देल
सहायक आचाय, संस्कृत–विभाग,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,
समरहिल, शिमला, हिमाचल प्रदेश,
भारत

अपूर्बा हलदर
NET, SET, संस्कृत–विभाग,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,
समरहिल, शिमला, हिमाचल प्रदेश,
भारत

Corresponding Author:
डॉ. सपना चन्देल
सहायक आचाय, संस्कृत–विभाग,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,
समरहिल, शिमला, हिमाचल प्रदेश,
भारत

श्रीमद्भगवद्गीता में गुणत्रय विभाग योग

डॉ. सपना चन्देल, अपूर्बा हलदर

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2023.v9.i5c.2225

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र में प्रकृति का स्वरूप और तीनों गुण अर्थात् सत्त्व, रजो और तमो गुणों के उद्भव, स्वरूप, लक्षण, कार्य, फल और परिणाम का वर्णन किया गया हैं। ये तीनों गुण किस प्रकार किस अवस्था में जीवधारी मनुष्य को कैसे बन्धन में बाँधते हैं और किस प्रकार से इस बन्धन मुक्त होकर मनुष्य परमब्रह्म को प्राप्त करता है।

कूटशब्दः योग, प्रकृति, गुणत्रय, श्रीमद्भगवद्गीता, ब्रह्मप्राप्ति

प्रस्तावना
'योग' शब्द युज् धातु से घञ् प्रत्यय से निष्पन्न होता है। इसका अर्थ है दो या दो से अधिक पदार्थों का मिलकर एक होना, मेल, मिलाप, संयोग, मिलन, सम्बन्ध, संसर्ग इत्यादि।[1] ऋग्वेद में 'योग' के विषय में कहा गया है कि जिसके बिना ज्ञानी अर्थात् विद्वान का कोई भी यज्ञकार्य सम्पूर्ण नहीं होता है, वही योग है।[2] अथर्ववेद के अनुसार योग वह है, जो सभी कार्य, धन और महत्वपूर्ण आकांक्षाओं में सदा साथ देता है।[3] कठोपनिषद् में बताया गया है कि उस स्थिर इन्द्रिय धारणा को ही 'योग' मानते है जिस समय मनुष्य प्रमादरहित हो जाता है।[4] अग्निपुराण एवं विष्णुमहापुराण में भी आत्मप्रयत्न की अपेक्षा से मन की जो विशिष्ट गति होती है उसका ब्रह्म से संयोग ही योग कहलाता हैं।[5] इस प्रकार से अत्यन्त वैशिष्टय से विशिष्ट धर्मरूपी योग जिसका होता है उस मुमुक्ष पुरूष को योगी कहते है।[6] ब्रह्मवैवर्तपुराण में बतलाया गया है कि स्वर्ण तथा ढेला, गृह तथा अरण्य, कीचर तथा चन्दन में जिसको समान ज्ञान है वे ही योगी कहे जाते हैं।[7] याज्ञवल्क्यस्मृति में कथित है कि यज्ञानुष्ठान, आचार, इन्द्रियनिग्रह, अंहिसा, दान, वेदाध्ययन और पुण्य कर्मो में यही श्रेष्ठ धर्म है कि योग द्वारा अर्थात् बाह्य चित्तवृत्ति के निरोध द्वारा आत्मा का यथातथ्य बोध होता है।[8] महर्षि पंतजलि के अनुसार 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' अर्थात् चित्त की वृत्तियों को रोक देना ही योग है।[9] योग वह उपाय है जिसके द्वारा जीवात्मा का मिलन परमात्मा में होता है।[10] योग के विषय में हठयोग की मान्यता का विशेष महत्त्व है। इसमें कहा गया है कि जैसे नमक पानी में मिल जाने से उसके साथ एकरूप हो जाता है वैसे ही आत्मा और मन की एकरूपता में समाधि उत्पन्न होता है।[11] श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्री कृष्ण ने योग के अनेक लक्षण अर्जुन को बताते हैं। हे अर्जुन! आसक्ति त्याग कर सिद्धि और असिद्धि के विषय में समभाव रख कर योग में स्थिर होकर अपना कर्म करो। ऐसी समता को ही योग कहते है।[12] दुःख के संयोग, वियोग को भी योग कहा गया है।[13] जो नियमित भोजन और विहार करता है, कर्म करने की आदतों में भी नियमित रहता है, जागना और सोना भी जिसका नियमपूर्वक होता है, उसके लिए योग दुःख का नाश करने वाला होता है।[14] भगवान् वासुदेव ने गीता में निष्काम योग का उपदेश दिया है, इसी से गीता को 'योगशास्त्र' कहते हैं।[15] इसी कारण भगवद्गीता के प्रत्येक अध्याय को योग की संज्ञा दी गयी है।[16] श्रीमद्भगवद्गीता के १४ वें अध्याय में सत्त्व, रजो और तमो गुणत्रय का वर्णन अधिक विस्तार से किया गया है, जो प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य विषय रहेगा।
ऋग्वेद में प्रकृति का स्वरूप तमस् के रूप में वर्णन है।[17] स्वामी दयानन्दसरस्वती ने ऋग्वेदभाष्य में कहा है कि सत्त्वोगुण, रजोगुण और तमोगुण मिला के जो प्रधान है, वही प्रकृति है।[18] महाभारतानुसार वर्णित है कि प्रकृति तमो, अव्यक्त, शिव, नित्य अज, योनि और सनातनादि हैं।[19] श्रीविष्णुमहापुराण के अनुसार भगवान् विष्णु का जो अव्यक्त कारण रूप है, उसे श्रेष्ठ ऋषिगण प्रधान शब्द से अभिहित करते है, वही प्रकृति है।[20] वही प्रकृति सत्त्व, रजस् और तमस् इन तीनों गुणों से युक्त हैं, संसार के कारण स्वरूप है एवं अनादि उत्पत्ति तथा विनाश से रहित है। प्रलयकाल से लेकर सृष्टिकाल से पहले तक यह सम्पूर्ण जगत् उसी में ही व्याप्त था।[21]

ब्रह्माण्डमहापुराण में कहा गया है कि प्रधान अर्थात् प्रकृति के तीनों गुणों की विषमता के कारण जीवों की उत्पत्ति होती है। उस समय अदृष्ट रूप से अधिष्ठित प्रकृति असत् आत्मकभाव से सदात्मकभाव में स्थित हो जाती है।[22] अतएव गुण की वैषम्य के आधार पर ही सभी अधिष्ठित क्षेत्रज्ञों की उत्पत्ति होती है।[23] श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण में बताया गया है कि संसार की कोई भी वस्तु इन तीन गुणों के बिना नहीं रह सकती। इस जगत में जितनी दृश्यमान वस्तुयें हैं वे सब त्रिगुणात्मक हैं।[24] शिवमहापुराण में वर्णित है कि सत्त्व, रजो एवं तमो इन तीन गुणों से ही जगत् की उत्पत्ति, पालन और विनाश होते है।[25] पद्ममहापुराण में बतलाया गया है कि जगत् के स्वामी स्वयं परमेश्वर ब्रह्मा ने गुणरूपी अभिव्यञ्जक से उत्पन्न होने वाले सात्त्विक, राजस और तामस इन तीन प्रकार के महतत्त्व की सृष्टि किए है।[26] वेदान्तसार के अनुसार आकाशादि पंचभूत की उत्पत्ति के समय उन आकाशादि में कारणवर्ती गुणों के क्रम से वे गुणत्रय उत्पन्न हुये हैं।[27] श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्री कृष्ण ने अर्जुन को कहा है कि, हे अर्जुन! सत्त्व, रजो एवं तमो ये वैषम्य युक्त तीनों गुण प्रकृति से उत्पन्न होते है और वे ही गुण निर्विकार जीवात्मा को देह में बांध देते हैं।[28]

तीनों गुणों का स्वरूपः सत्त्व, रजो और तमो–इन तीन गुणों का समाहार ही त्रिगुण है।[29] महाभारत के अनुसार ये तीनों गुण अपरिच्छिन्न रूप से लोगों के दृष्टिगोचर हुआ करते हैं।[30] ईश्वरकृष्ण ने सांख्यकारिका में स्पष्ट किया है कि सत्त्व, रजो और तमो गुण क्रमशः सुख, दुःख एवं विषादात्मक हैं। इन तीनों गुणों में सत्त्वगुण प्रकाशक, रजोगुण प्रवर्त्तक और तमो गुण नियामक अर्थात् रोकने वाला है। ये तीनों परस्पर एक दूसरे का आविर्भाव, आश्रय, जनन, परस्पर सहाय मिथुनवृत्ति वाले हैं।[31] गीता के अनुसार वे तीनों गुणों में ही विभिन्न प्रकार के ज्ञान, कर्ता और कर्म समाहित हैं।[32]

सत्त्वगुण का स्वरूपः महाभारत में कहा गया कि सत्त्व स्नेहभावसम्पन्न युक्त गुण है।[33] श्रीमद्देवीभागवत महापुराण के अनुसार सत्त्व प्रेमात्मक है और सुख से प्रेम की उत्पत्ति करती है।[34] सत्त्व का वर्ण श्वेत है और इससे सदा धर्म में प्रीति होती है।[35] बृहन्नारदीयपुराणानुसार उल्लेख है कि जब प्रहर्ष, प्रीति, आनन्द, सुख[36] और कभी–कभी शान्तचित्तता अनुभूत होता है, तब इसे सात्त्विकगुण के नाम से जानें।[37] यही बात महर्षि व्यासदेव ने ब्रह्मपुराण में भी बतलाया है।[38] सांखाचार्य ईश्वरकृष्ण ने कहा सत्त्व लघु तथा प्रकाशक हैं।[39]

श्रीमद्भगवद्गीता में इसकी पुष्टि करते हुए कहा गया है कि तीनों गुणों में सत्त्वगुण स्वच्छ होने से चैतन्य का व्यञ्जक है और सुख का भी व्यञ्जक है। वह सत्त्व सुख और ज्ञान संग से देही को बाँधता है।[40] अतएव सत्त्व सुख में आसक्त करता है[41] और ज्ञान को भी उत्पन्न करता है।[42] जब शरीर के सारे द्वार और इन्द्रियों में प्रकाश शब्दादि विषयक ज्ञान होता है तब सत्त्वगुण बढ़ जाता है।[43] सत्त्व की वृद्धि होने पर जब जीव मृत्यु को प्राप्ति करता है तब उत्कृष्ट उपासकों के निर्मल लोक को प्राप्त होता है।[44]

रजोगुण का स्वरूपः महाभारत के अनुसार रजोगुण क्षत्रियवर्ण में विद्यमान रहता है।[45] श्रीदेवीभागवतमहापुराण में व्यासदेव ने कहा है कि रजोगुण का रंग लाल है और यह गुण एक प्रकार की अद्भुत अप्रीति को पैदा करता है।[46] वायुपुराण में स्वीकारा है कि तीनों गुणों में जब रजोगुण का अतिरेक होता है तब अहंकार की आविर्भाव होता है।[47] बृहन्नारदीयपुराण में बताया गया है कि असन्तोष, परिताप, शोक, लोभ, क्रोध रजोगुण के लक्षण हैं और इनका अनुभव देही को होता रहता है।[48] ब्रह्मपुराण में भी वर्णित है कि अभिमान, मृषा, वाद, लोभ आदि ये सब रजोगुण के चिह्न हैं और हेतु तत्त्व के कारण से ही होते हैं।[49] स्कन्दमहापुराण में कथित है कि रजोगुण के आवरण से जिनकी आंखे बन्द है, उसे कुछ भी परिलक्षित नहीं होता है।[50] सांख्याचार्य ईश्वरकृष्ण के मत में रजो उत्तेजक और चंचल स्वभाव वाला है।[51]

श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् वासुदेव ने कुन्तीपुत्र अर्जुन को बताया है कि हे कौन्तेय! अभिलाषा और आसङ्ग अर्थात् विनष्ट होती हुई वस्तु की रक्षा की इच्छा से उत्पन्न रागरूप रजोगुण को समझो। वह गुण कर्मफल की आसक्ति से जीवात्मा को बाँधता है[52] और कर्म में आवद्ध करता है।[53] रजो गुण के वृद्धि होने पर लोभ, प्रवृत्ति, कर्म का आरम्भ, अशान्ति और इच्छा ये सब उत्पन्न होते हैं।[54] रजोगुण के बढ़ने पर ही जीव मृत्यु को प्राप्त होता है और कर्म में आसक्तिवाले मनुष्यों में उत्पन्न होता है।[55]

तमोगुण का स्वरूपः महाभारत में कहा गया है कि तमोगुण शुद्रवर्ण में मुख्यतः रहते है।[56] श्रीदेवीभागवतमहापुराण में कथित है कि तमोगुण का वर्ण कृष्ण अर्थात् काला है। यह गुण में मोह, विषाद, आलस्य, अज्ञान, गभीर निद्रा, दीनता, डर, विवाद, कृपणता, कुटिलता, वैषम्य, प्रबल नास्तिकता और परदोषदर्शन उत्पत्ति होती हैं।[57] बृहन्नारदीयपुराण के अनुसार अपमान, मोह, प्रमाद, स्वप्न और तन्द्रा जो कभी–कभी देह में दिखाई देते है, वह विविध तामसगुण हैं।[58] यही बात ब्रह्मपुराण में भी स्पष्टरूप से उल्लेख मिलता है।[59] लिंगपुराण के अनुसार कलियुग में तमोगुण के प्रभाव से ही व्याकुल इन्द्रियों वाले मनुष्य माया, असुया और तपस्वियों का वध किया करते थे।[60] इश्वरकृष्ण के मतानुसार तमोगुण गुरू और आवरणकारी है।[61] श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् जनार्दन ने कहा है कि हे भरत! सभी शरीरधारियों को भ्रान्त करने वाला तथा अज्ञान से उत्पन्न तमोगुण को पहचानो। वह प्रमाद आलस्य निद्रा के द्वारा समस्त देहधारी जीवों को बाँधते है।[62] यह गुण मनुष्य के ज्ञान को ढक कर प्रमाद में नियुक्त करता है।[63] तमोगुण के बढ़ने पर अप्रकाश, निष्क्रियता, प्रमाद और मोह ये सब प्रकट होते हैं।[64] रजोगुण के तरह तमोगुण की वृद्धि होने पर मृत्यु को प्राप्त करने वाला जीव पशु–पक्षी आदि मूढयोनियों में जन्म लेता हैं।[65]

गुणसन्निपात का वर्णन करते हुए महाभारत में कहा गया है कि सत्त्व, रजो और तमो ये तीनों गुण एक दूसरे के आश्रय तथा आनुजीव्य अवलम्बन करते हुए परस्पर के अनुवर्ती होकर अनुरागभाजन होते हैं।[66] जैसे स्त्री और पुरुष परस्पर मिलजुलकर काम करते हैं, उसी प्रकार तीनों गुण बराबर युग्मभावकों अपनायें रहते है।[67] गीता में भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा कहा गया है कि हे भरत पुत्र! कभी–कभी रजोगुण और तमोगुण को दबा कर सत्त्व गुण बढ़ता है तथा सत्त्वगुण और तमोगुण को दबा कर रजोगुण बढ़ता है, वैसे ही सत्त्व और रजोगुण को परास्त करके तमोगुण प्रधान बन जाता है। इस प्रकार श्रेष्ठता के लिए निरन्तर स्पर्धा चलती रहती है।[68] सात्त्विक कर्म का फल सुखरूप है। परन्तु रजोगुण में किये गये कर्म का फल दुःख होता है और तामस में कर्म अज्ञानता में प्रतिफलित होते हैं।[69] सत्त्वगुण में स्थित पुरुष देवलोक में जाते है, रजोगुण वाले पुरुष पृथ्वीलोक में रहते हैं और तमो आसकत व्यक्ति अधोगति को तथा नरकों को प्राप्त होते हैं।[70] भगवान् मनु के मत में सतोगुणी लोक देव योनि को, रजोगुणी मनुष्य योनि को और तमोगुणी तिर्यक योनि को प्राप्त होते हैं।[71] गीता में उल्लिखित है कि जब यह पुरुष शरीर की उत्पत्ति के कारणभूत इन तीनो गुणों का उल्लङ्घन करके जन्म, मृत्यु, जरा और दुःख से रहित होता हैं, तब अमरत्त्व प्राप्त करता है।[72] और जो पुरूष परम प्रेमरूप पूर्ण भक्तियोग के द्वारा भगवान् श्रीकृष्ण को निरन्तर भजता है, वह इन तीनों गुणों का अच्छी प्रकार से अतिक्रम करके सच्चिदानन्दरूप ब्रह्म को प्राप्त होने के योग्य बन जाता है।[73]

सन्दर्भ ग्रन्थ संकेत

1. बृहत हिन्दी शब्दकोश (खण्ड–2), पृ॰ 2059–2056
2. यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विश्चितश्चन। स धीनां योगमिन्वति।। ऋग्वेद, 1/18/7

3. स घा नो योग आ भुवत्स राये स पूरैध्याम्। अथर्ववेद, 20/69/1
4. तां योगमिति मन्यते स्थिरमिन्द्रियधारणाम्।
अप्रमत्तस्तदा भवति योगो हि प्रभावाप्ययौ। कठोपनिषद्, 2/3/11
5. अत्मप्रयत्नसापेक्षा विशिष्टा या मनोगतिः।
तस्या ब्रह्मणि संयोगो योग इत्यभिधीयते। अग्निपुराण, 379/24–25 और श्रीविष्णुमहापुराणम्, 6/7/31
6. एवमत्यन्तवैशिष्ट्ययुक्तधर्मोपलक्षणः।
यस्य योगस्य वै योगी मुमुक्षुरभिधीयते।। श्रीविष्णुमहापुराणम्, 6/7/32
7. स्वर्णे लोहे गृहेऽरण्ये पंके सुस्निग्धचन्दने।
समताभावना यस्य स योगी परिकीर्तितः।। ब्रह्मवैवर्तपुराणम्, गणपतिखण्डम्, 35/72
8. इज्याचारदमाहिंसादानस्वाध्यायकर्मणाम्।
अयं तु परमो धर्मो यद्योगेनात्मदर्शनम्।। याज्ञवल्क्यस्मृति, आचाराध्याय, उपोद्घातप्रकरण, 8
9. योगसूत्र, 1/2
10. संयोगो योगमित्याहुर्जीवात्म परमात्मनोः। सर्वदर्शनसंग्रह, पातञ्जलदर्शन, पृ॰ 673
11. सलिले सैन्धवं यद्वव् साम्यं भजति योगतः।
तथात्ममनसोरैक्यं समाधिरभिधीयते।। हठप्रदीपिका, 4/5
12. योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्ग त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।। श्रीमद्भगवद्गीता, 2/48
13. दुःखसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम्। वही, 6/23
14. युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तास्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।। वही, 6/17
15. हिन्दी विश्वकोश (भाग–18), पृ॰ 707
16. समग्र योग, पृ॰ 48
17. तम आसीत्तमसा गूढमग्रे। ऋग्वेद, 10/129/3
18. सत् प्रकृति। स्वामी दयानन्दसरस्वती, ऋग्वेदभाष्य, सृष्टिविद्याविषय, ऋग्वेद, 10/129/1
19. तमोऽव्यक्तं शिवं नित्यमजं योनिः सनातनः। महाभारत आश्वमेधिक पर्व, 39/22
20. अव्यक्तं कारणं यत्तत्प्रधानमृषिसत्तमैः।
प्रोच्यते प्रकृतिः।। श्रीविष्णुमहापुराणम्, प्रथम अंश, 2/19
21. त्रिगुणं तज्जगद्योनिरनादिप्रभवाप्ययम्।
तेनाग्रे सर्वमेवासीद्व्याप्तं वै प्रलयादनु।। श्रीविष्णुमहापुराणम्, प्रथम अंश, 2/21
22. प्रधानगुणवैषम्यात्सर्गकाले प्रवर्त्तते।
अदृष्टाऽधिष्ठितात्पूर्वे तस्मात्सदसदात्मकात्।। ब्रह्माण्डमहापुराणम्, पूर्वभाग, 4/12
23. गुणवैषम्यमासाद्य प्रसूयन्ते ह्यधिष्ठिताः। वायुपुराणम्, पूर्वार्धर्म, 5/13
24. एभिर्विहीनं संसारे वस्तु नैवत्र कुत्रचित।
वस्तुमात्रं तु यददृश्यं संसारे त्रिगुणं हि तत्।। श्रीमद्देवीभागवतम् महापुराणम्, तृतीयस्कन्ध, 6/69
25. सर्गरक्षालयकरस्त्रिगुणे। श्रीशिवमहापुराणम्, द्वितीय रुद्रसंहिता : प्रथम सृष्टिखण्ड, 9/58
26. गुणव्यंजनसंभूतः सर्गकाले नराधिप। सात्त्विको राजसश्चैव तामसश्च त्रिधा महान्।। श्रीपद्ममहापुराणम् (प्रथमभाग), सृष्टिखण्ड, 2/89
27. तदानीं सत्त्वरजस्तमांसि कारणगुणप्रक्रमेण तेष्वाकाशदिषूत्पद्यन्ते। वेदान्तसार, कारिका–19
28. सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसभवाः।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम्।। श्रीमद्भगवद्गीता, 14/5
29. बृहत हिन्दी शब्दकोश (खण्ड–1), पृ॰ 1185
30. अविच्छिन्नानि दृश्यन्ते रजः सत्त्वं तमस्तथा। महाभारत, आश्वमेधिक पर्व, 39/1
31. प्रीत्यप्रीतिविषादात्मकाः प्रकाशप्रवृत्तिनियमार्थाः।
अन्योऽन्याभिभवाश्रयजनन मिथुनवृत्तयश्च गुणाः।। सांख्यकारिका, 12
32. ज्ञानं कर्म च कर्ता च। श्रीमद्भगवद्गीता, 18/19
33. स्नेह भावस्तु सात्त्विकः। महाभारत, आश्वमेधिकपर्व, 39/17
34. सत्वं प्रीत्यात्मकं ज्ञेयं सुखात्प्रीतिसमुद्भवः। श्रीमद्देवीभागवतम् महापुराणम्, तृतीय स्कन्ध, 8/2
35. श्वेतवर्ण तथा सत्वं धर्मे प्रीतिकरं सदा। वही, 8/4
36. प्रहर्षः प्रीतिरानन्दः सुखं वा शान्तचित्तता। बृहन्नारदीय पुराणम्, 44/55
37. कथंचिदभिवर्तन्त इत्येते सात्त्विका गुणाः। वही, 44/55
38. प्रहर्षः प्रीतिरानन्दं स्वाम्यं स्वस्थात्मचित्तता।
अकस्माद्यदि वा कस्माद्वदन्ति सात्त्विकान्गुणान्।। ब्रह्मपुराण (द्वितीयखण्ड) 45/62
39. सत्त्वं लघु प्रकाशकम्। सांख्यकारिका, 13
40. तत्र सत्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम्।
सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ।। श्रीमद्भगवद्गीता, 14/6
41. सत्त्व सुखे संजयति। वही, 14/9
42. सत्त्वात्संजायते ज्ञानम्। वही, 14/17
43. सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते।
ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत।। वही, 14/11
44. यदा सत्त्वे प्रवृद्धेतु प्रलयं याति देहभृत्।
तदोत्तमविदां लोकानमलान्प्रतिपद्यते।। वही, 14/14
45. रजः क्षत्रे। महाभारत, आश्वमेधिक पर्व, 39/11
46. रक्तवर्ण रजः प्रोक्तमप्रीतिकरमद्भुतम्। श्रीमद्देवीभागवतम् महापुराणम्, तृतीय स्कन्ध, 8/6
47. त्रिगुणाद्रजसोद्रिक्तादहंकारस्ततोऽभवत्। वायुपुराणम्, पूर्वार्धर्म्, 4/48
48. अतुष्टिः परितापश्च शोको लोभस्तथा क्षमा।
लिङ्गानि रजसस्तानि दृश्यन्ते देह हेतुभिः। बृहन्नारदीयपुराणम्, 44/55,56
49. अभिमानो मृषावादो लोभो मोहस्तथाः क्षमा।
लिङ्गानि रजसस्तानि वर्तन्ते हेतुतत्वतः।। ब्रह्मपुराण (द्वितीयखण्ड), 45/63
50. न किंचिदपि पश्यन्ति रजसारूढदृष्टयः। स्कन्दमहापुराणम्, अरूणाचलमाहात्म्य (उत्तरार्ध), 9/17
51. हष्टमुपष्टम्भकं चलञ्च रजः। सांख्यकारिका, 13
52. रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम्।
तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसङ्गेन देहिनम्।। श्रीमद्भगवद्गीता, 14/7
53. रजः कर्मनि। वही, 14/9
54. लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा।
रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ।। वही, 14/12
55. रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसङ्गिषु जायते। वही, 14/15
56. तमः शुद्रे। महाभारत, आश्वमेधिक पर्व, 39/11
57. कृष्णवर्ण तमः प्रोक्तं मोह नं च विषादकृत्। आलस्यं च तथाऽज्ञानं निद्रा दैन्यं भयं तथा।।
विवादश्चैव कार्पण्यं कौटिल्यं रोष एव च। वैषम्यं वाऽतिनास्तिकयं परदोषानुदर्शनम्।। श्रीमद्देवीभागवतम् महापुराणम्, तृतीय स्कन्ध, 8/9,10
58. अपमानस्तथा मोहः प्रमादः स्वप्नतन्द्रिते।
कथंचिदभिवर्तते विविधास्तामसा गुणाः।। बृहन्नारदीयपुराणम्, 44/56,57
59. तथा मोहः प्रमादश्च तन्द्री निद्राऽप्रबोधिता।
कथंचिदभिवर्तन्ते विज्ञे यास्तामसा गुणाः।। ब्रह्मपुराण (द्वितीयखण्ड), 45/64

60. तिष्ये मायामसुयां च वधं चैव तपस्विनाम्।
साधायंति नारास्तत्र तमसा व्याकुलेन्द्रियाः।। लिंगपुराण (प्रथमखण्ड), 30/1
61. गुरु वरणकमेव तमः। सांख्यकारिका, 13
62. तमस्त्वज्ञानं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम्।
प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत।। श्रीमद्भगवद्गीता, 14/8
63. ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे संजयत्युत। वही, 14/9
64. अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च। वही, 14/13
65. तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु जायते। वही, 14/15
66. अन्योन्यमनृषज्जन्ते अन्योन्यं चानुजीविनः।
अन्योन्यापाश्रयाः सर्वे तथान्योन्यानुवर्तिनः।। महाभारत, आश्वमेधिक पर्व, 39/2
67. यथा स्त्रीपुरुषश्चैव मिथुनौ च परस्परम्।
तथा गुणाः समायान्ति युग्मभावं परस्परम्।। श्रीमद्देवीभागवतम् महापुराणम्, तृतीय स्कन्ध, 8/49
68. रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत।
रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा।। श्रीमद्भगवद्गीता, 14/10
69. कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम्।
रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम्।। वही, 14/16
70. ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः।
जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः।। वही, 14/18
71. देवत्वं सत्त्विका यान्ति मनुष्यत्वं च राजसाः।
तिर्यकत्वं तामसा। मनुस्मृति, 12/40
72. गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवान्।
जन्ममृत्युजरादुःखैविमुक्तोऽमृतमश्नुते।। श्रीमद्भगवद्गीता, 14/20
73. मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते।
स गुणान् समतीत्यैतान् ब्रह्मभूयाय कल्पते।। वही, 14/26